मेरा गुस्सा

पापा-मम्मी पर गुस्सा आता है जब वो होली नहीं खेलने देते। मम्मी-पापा मारते हैं तब भी गुस्सा। बीनने जाते हैं तब कोई भी हमको गाली देता है तो मुझे गुस्सा आता है। मुझे लगता है उसको मार दूँ।

एक बार मैं अपनी दोस्त के साथ बीन रही थी। दोनों हिस्सेदारी में बीन रहे थे। मेरे सिर पर बहुत सारा माल था। बहुत वज़न था। मैंने कहा, "थोड़ी देर अपने सर पर रख ले।" तो वो नहीं रख रही थी तो मुझे बहुत गुस्सा आ रहा था। मैंने पूरा भरा थैला उस लड़की पर फेंक दिया।

—सुजित्रा, चौदह वर्ष, भोपाल, म. प्र.

चित्र : अतनु राय

मेरे गाँव का अनोखा इलाज

मेरे गाँव में एक दवाई का पौधा है जिसे हमारी भाषा में तालूब कहते हैं। हमारे इधर जब किसी को चोट लग जाती है या खून निकलने लगता है तो लोग इसी पेड़ की पत्तियाँ इस्तेमाल करते हैं। वे पत्तियों को तोड़कर निचोड़ लेते हैं और उनके रस को घाव पर लगाते हैं। इससे खून बहना बन्द हो जाता है और घाव जल्दी ठीक हो जाता है। एक दिन मैं आग जलाने के लिए लकड़ियाँ काट रही थी कि अचानक मेरे हाथ से दाओ (बहुत सारी चीज़ों को काटने के काम आने वाला एक लम्बा-सा चाकू) फिसलकर मेरे पाँव में लग गया। तो मेरी सहेली सोनिया ने मुझे तालूब की पत्तियाँ लगाने को कहा। फिर मैंने पत्तियाँ तोड़ीं और धोकर घाव पर लगा लीं। वो चिल्लाई, "बेवकूफ ऐसे खून बहना कैसे बन्द होगा? तुम्हें पत्तियों को निचोड़कर उनका रस लगाना होगा।" मैंने ऐसा ही किया और दो-तीन दिनों में घाव ठीक हो गया।

वाह। मुझे बड़ा ही आश्चर्य हुआ। बिना टिटनेस का इंजेक्शन और मलहम लगाए ही घाव ठीक हो गया। ना तो सूजन आई ना ही किसी तरह का इंफेक्शन।

तो अगर तुम्हें यह दवाई का पौधा देखना हो तो मेरे गाँव आना। अरे, लेकिन मैं आपको अपने गाँव का नाम बताना तो भूल ही गई। मेरा गाँव है मेडो, अरुणाचल प्रदेश में, उत्तर पूर्वी भारत के मशहूर सन्तरे वाले कस्बे वेकरो के पास।

—दिमुला अप्पा, आठवीं, वेकरो, अरुणाचल प्रदेश